शुगर इंडस्ट्री पर भारी पड़ रहा प्राइस का इक्वेशन

[श्रेया जय *नई दिल्ली*]

ीनी मिल मालिक ट्रेड यूनियनों की तरह टकराव ी राह पर आ गए हैं और कह रहे हैं कि गन्ने की ीमत इतनी ज्यादा हो गई है कि वे पेराई ही शुरू नहीं रेंगे। उधर, कर्ज चुकाने और अगली फसल के लिए कम के इंतजाम की खातिर किसान गन्ने की अच्छी ीमत की मांग कर रहे हैं।

इस बीच वोटरों और बिजनेस कम्युनिटी, दोनों ो खुश रखने की कोशिश में राजनेताओं ने दोनों ो नाराज कर दिया है। इन हालात के चलते शुगर डस्ट्री की हालत पतली होती दिख रही है, जो बूमिंग ार्केट में कई वर्षों से रफ्तार पर थी।

कर्नाटक में एक गन्ना किसान ने विधानसभा े सामने खुदकुशी कर ली। देश में सबसे ज्यादा ीनी उत्पादन करने वाले महाराष्ट्र में एक्सपर्ट्स ा कहना है कि कांग्रेस और गठबंधन सरकार में सकी साझेदार एनसीपी के बीच तनातनी ने हालात टिल बना दिए हैं। तीन सीजन तक गन्ने की अच्छी फसल, सरप्लस शुगर प्रॉडक्शन और अच्छे निर्यात के बाद इंडस्ट्री खुशहाली की राह पर बढ़ती दिख रही थी, क्योंकि सरकार ने मिलों पर कॉस्ट कंट्रोल में नरमी की थी। हालांकि कुछ ही महीनों में स्थिति बदल गई। पिछले तीन वर्षों में चीनी का दाम करीब 10 पर्सेंट घटा है, जबकि गन्ने की कीमत दो सालों में 37 पर्सेंट बढ़ी है। इस साल मिलवाले गन्ने की कीमत में कमी चाहते हैं, किसान ज्यादा दाम चाहते हैं तो यूपी सरकार ने कीमत पिछले साल के बराबर रख दी है।

इससे पहले मिलों ने गन्ने की कीमत में बढ़ोतरी बर्दाश्त की थी, लेकिन तब बाजार की रफ्तार भी अच्छी थी। अब एक्सपोर्ट में कमी आई है और कीमतें भी कम हैं। नए सीजन की शुरुआत 88 लाख टन सरप्लस स्टॉक के साथ हो रही है। यह भारत की कुल सालाना डिमांड 230 लाख टन का करीब 40 पर्सेंट है। इस सीजन में उत्पादन 250 लाख टन रहने का अनुमान है। ब्राजील और थाईलैंड में सरप्लस प्रॉडक्शन के कारण ग्लोबल मार्केट में एक्सपोर्ट की गुंजाइश भी कम ही है। ऐसे हालात को देखते हुए बजाज हिंदुस्तान, मवाना शुगर, सिंभावली शुगर्स सहित अन्य प्रमुख चीनी कंपनियों के शेयरों में गिरावट को आश्चर्यजनक नहीं कहा जा सकता है।

करगिल इंडिया में शुगर बिजनेस की हेड स्वाति शुक्ला ने कहा कि यूपी जैसे राज्य में लगातार पांच वर्षों तक गन्ने की अच्छी कीमतों ने किसानों को गन्ने की रोपाई बढ़ाने को प्रोत्साहित किया। अब जहां गन्ने की खेती बढ़ी है, वहीं मिलों को लग रहा है कि बढ़ती लागत और चीनी की कीमतों में ठंढेपन से उनका कारोबार चौपट हो सकता है। इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन के डायरेक्टर जनरल अविनाश वर्मा ने कहा कि डीकंट्रोल तब किया गया था जब मार्केट में सरप्लस स्टॉक था, लिहाजा तब मिलों में जल्दी से जल्दी अपना माल बेचने की होड़ थी और वे किसानों को पेमेंट कर रही थीं। तबसे चीनी की कीमतें गिरी हैं और एसएपी उसके मुताबिक नहीं रहा है।

Economic times

2/12/13

VK